

स्वास्थ्य वर्धक  
यूनानी  
जड़ी बूटियाँ



केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद

स्वास्थ्य वर्धक  
**यूनानी**  
जड़ी बूटियाँ



केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद  
आयुष मंत्रालय, भारत सरकार  
नई दिल्ली

स्वास्थ्य वर्धक यूनानी जड़ी बूटियाँ

## स्वास्थ्य वर्धक यूनानी जड़ी बूटियाँ

पुनःमुद्रण : दिसम्बर 2015 • 5,000 प्रतियाँ

प्रकाशक:

महानिदेशक

केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी,

सिद्ध एवं होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय, भारत सरकार

61-65, इंस्टीट्यूशनल एरिया, जनकपुरी, नई दिल्ली-110 058, भारत

दूरभाष: +91-11-28521981, 28525982, 28525983,  
28525831/52/62/83/97, 28520501, 28522524

फैक्स: +91-11-28522965

ईमेल: [unanimedicine@gmail.com](mailto:unanimedicine@gmail.com)

वैबसाइट: [www.ccrum.net](http://www.ccrum.net)

मुद्रक:

रेकमो प्रैस प्राईवेट लिमिटेड

सी-59, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया फेज-1, नई दिल्ली-110020

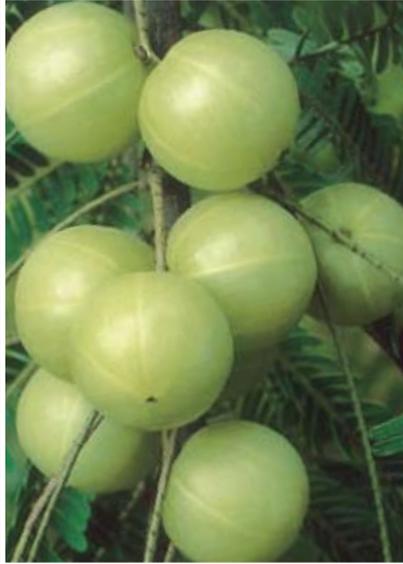
## विषय सूची

1. आमला (Emblic Myrobalan) (*Emblica officinalis* Gaertn.).....5
2. अमरूद (Guava) (*Psidium guajava* Linn.).....6
3. अंजीर (Fig) (*Ficus carica* Linn.).....7
4. अडूसा (Vasaka) (*Adhatoda vasica* Nees.) .....8
5. असगंध (Withania) (*Withania somnifera* (Linn.) Dunal.) .....9
6. अस्पगोल / इसबगोल (Ispaghul) (*Plantago ovata* Forsk.) .....10
7. बादियान / सौंफ (Fennel) (*Foeniculum vulgare* Mill.)..... 11
8. बेद अंजीर / अरण्ड (Castor) (*Ricinus communis* Linn.) .....12
9. बेल (Bengal Quince) (*Aegle marmelos* Corr.) .....13
10. गाजर (Carrot) (*Daucus carota* Linn.) ..... 14
11. गिलो (Moon Creeper) (*Tinospora cordifolia* (Willd.) Miers.) ..... 15
12. गुल-ए-सुर्ख / गुलाब (Rose) (*Rosa damascena* Mill.) ..... 16
13. हिना / मेंहदी (Henna) (*Lawsonia inermis* Linn.) ..... 17
14. हुलबा / मेथी (Fenugreek) (*Trigonella foenum-graecum* Linn.)..... 18
15. इनाबुस सालब / मको (Black Nightshade) ..... 19  
(*Solanum nigrum* Linn.).....
16. इजखिर (Lemon Grass) (*Cymbopogon jwarancusa* Schult.).....20
17. जामुन (Black Berry) (*Syzygium cumini* (Linn.) Skeels) .....21

## स्वास्थ्य वर्धक यूनानी जड़ी बूटियाँ

18. कलौंजी (Small Fennel) ( <i>Nigella sativa</i> Linn.).....	22
19. कमून/ज़ीरा सफ़ेद (Cumin) ( <i>Cuminum cyminum</i> Linn.) .....	23
20. कासनी (Cichory) ( <i>Cichorium intybus</i> Linn.).....	24
21. कताँ/अलसी (Linseed) ( <i>Linum usitatissimum</i> Linn.) .....	25
22. नीम (Margosa) ( <i>Azadirachta indica</i> A. Juss.).....	26
23. पपीता (Papaya) ( <i>Carica papaya</i> Linn.) .....	27
24. रेहान/तुलसी (Holy Basil) ( <i>Ocimum sanctum</i> Linn.).....	28
25. सतावर (Asparagus) ( <i>Asparagus racemosus</i> Willd.).....	29
26. सीर/लहसुन (Garlic) ( <i>Allium sativum</i> Linn.).....	30
27. शहतूत (Mulberry) ( <i>Morus indica</i> Linn.).....	31
28. तेज़पात (Indian Bay Leaf) .....	32
( <i>Cinnamomum tamala</i> Nees. & Eberm.)	

**आमला**  
**(Emblic Myrobalan)**  
*(Emblica officinalis Gaertn.)*



'आमला' भारत, श्रीलंका और चीन में पाया जाता है। इसका स्वभाव प्रथम श्रेणी में सर्द तथा दूसरी श्रेणी में शुष्क होता है। आमला हाबिस और मुसक्किन होता है, तथा शरीर के मुख्य अंगों को शक्ति प्रदान करता है। आमले का प्रयोग अतिसार में लाभदायक होता है, तथा मस्तिष्क व दृष्टि की कमजोरी में भी लाभदायक है। आमला आमाशय व गर्भाशय की दुर्बलता को दूर करने के लिये भी इस्तेमाल किया जाता है। एक खुराक में आमले की 3 से 5 ग्राम तक मात्रा ली जा सकती है।

**अमरूद**  
**(Guava)**  
(*Psidium guajava* Linn.)



'अमरूद' भारत, पाकिस्तान और बंगलादेश में पाया जाता है। इसका स्वभाव प्रथम श्रेणी में सर्द (शीतल) व तर (आद्र) है। इसका फल और इसके पत्ते दवा के रूप में इस्तेमाल किये जाते हैं। अमरूद हृदय व मस्तिष्क को शक्ति देता है, कॉलेस्ट्रॉल को कम करता है और कब्ज को तोड़ता है। इसके पत्तों का जोशांदा (काढ़ा) गले की ख़राश और नज़ले में बहुत लाभकारी है।

## अंजीर

(Fig)

(*Ficus carica* Linn.)



'अंजीर' भारत, पाकिस्तान, अफ्रीका और चीन में पैदा होता है। इसका स्वभाव दूसरी श्रेणी में गर्म व तर (आद्र) है। अंजीर कब्ज को दूर करता है और शरीर को शक्ति देती है। यह शरीर के हानिकारक पदार्थों को बाहर निकालता है और इसीलिये फ़ालिज और गठिया में बहुत प्रभावकारी है। यह गुर्दे (वृक्क) और मसाने (मूत्राशय) की पथरी को तोड़ता है और पेशाब (मूत्र) की जलन को दूर करता है। अंजीर 2 से 5 की संख्या में इस्तेमाल किया जा सकता है।

**अडूसा**  
**(Vasaka)**  
(*Adhatoda vasica* Nees.)



'अडूसा' भारत, पाकिस्तान और बंगलादेश में पाया जाता है। इसका स्वभाव प्रथम श्रेणी में गर्म व शुष्क है। इसके फूल, पत्ते और जड़ दवा के तौर पर इस्तेमाल किये जाते हैं। पत्ते और जड़ का जोशांदा (काढ़ा) खांसी, नज़ले और जुकाम में प्रभावकारी होता है। यह शरीर के किसी भी अंग सं खून आने को बन्द करता है। तपेदिक और दमे की बेहतरीन दवा है। इसकी एक खुराक की मात्रा 3 ग्राम होती है।

**असगंध**  
**(Withania)**  
(*Withania somnifera* (Linn.) Dunal.)



'असगंध' भारत, पाकिस्तान और बंगलादेश में पाया जाता है। इसका स्वभाव तीसरी श्रेणी में गर्म व शुष्क है। औषधि गुण इसकी जड़ में पाये जाते हैं। असगंध ल्यूकोरिया, कमर के दर्द और गठिया में बहुत लाभदायक है। सामान्य कमजोरी को दूर करता है और स्वास्थ्य वर्धक है। इसकी एक खुराक में 3 से 5 ग्राम तक की मात्रा इस्तेमाल की जा सकती है।

## अस्पगोल (इसबगोल) (Ispaghul) (*Plantago ovata* Forsk.)



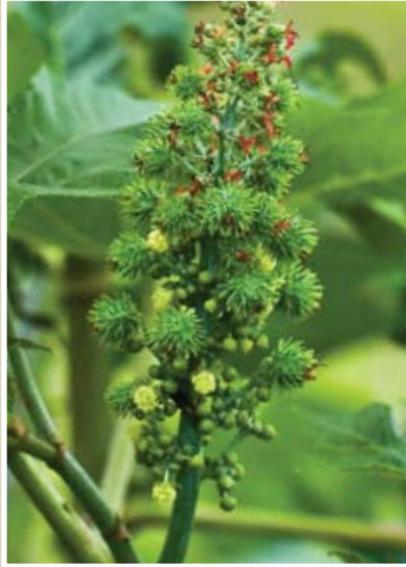
‘अस्पगोल’ का पौधा भारत, पाकिस्तान, ईरान और अफ़गानिस्तान में अधिकता से पाया जाता है, हालांकि दुनिया के लगभग हर भाग में यह पैदा होता है। अस्पगोल का स्वभाव दूसरी श्रेणी में सर्द व तर होता है। अस्पगोल को पेचिश के उपचार के लिये इस्तेमाल किया जाता है। यह खांसी, नज़ला, जुकाम और गले की ख़राश के लिये बहुत लाभकारी है। एक खुराक में इसकी मात्रा 3 से 9 ग्राम तक हो सकती है।

## बादियान (सौंफ़) (Fennel) (*Foeniculum vulgare* Mill.)



‘बादियान’ भारत, पाकिस्तान, नेपाल, चीन, अरब और रूस में पैदा होता है। इसका स्वभाव दूसरी श्रेणी में गर्म व शुष्क होता है। औषधि के रूप में इसके बीज और जड़ इस्तेमाल होते हैं। बादियान पाचक होता है और गैस को दूर करता है। पेट दर्द और अफारे में बहुत लाभकारी है। छाती, यकृत और तिल्ली की बीमारियों में भी फ़ायदा पहुंचाता है। इससे अमाशय (पेट) की कमजोरी दूर हो जाती है। बादियान की जड़ गठिया, फ़ालिज इत्यादि का बहुत प्रभावकारी इलाज है। बादियान के लगातार इस्तेमाल से आंखों की रौशनी बढ़ती है। इसकी एक खुराक में 5 से 7 ग्राम की मात्रा काफी है।

**बेद अंजीर (अरण्ड)**  
**(Castor)**  
(*Ricinus communis* Linn.)



‘बेद अंजीर’ भारत, पाकिस्तान, अरब, चीन और अफ्रीका में पाया जाता है। इसका स्वभाव दूसरी श्रेणी में गर्म और शुष्क है। दवा के रूप में इसके पत्ते और बीज इस्तेमाल किये जाते हैं। अरण्ड दस्तावर होता है, इसलिये कब्ज तोड़ने में काम आता है। इसके पत्ते सूजन दूर करते हैं और इन्हें चोट और गठिया में इस्तेमाल किया जाता है। इससे हानिकारक पदार्थ शरीर से बाहर निकल जाते हैं। कैस्टर ऑयल भी इसी से बनाया जाता है। इसके 5 बीज खुराक के तौर पर काफी होते हैं। इसके पत्ते बाहरी इस्तेमाल में आते हैं।

**बेल**  
**(Bengal Quince)**  
(*Aegle marmelos* Corr.)



‘बेल’ भारत, पाकिस्तान, बंगलादेश और चीन में पैदा होता है। इसका स्वभाव पहली श्रेणी में गर्म व शुष्क है। औषधि के रूप में इसके फल, जड़ और पत्ते इस्तेमाल में लाये जाते हैं। बेलगिरी (इसका फल) क़ाबिज़ (कब्ज़ पैदा करने वाली) होती है और दस्तों (अतिसार) को रोकने में लाभदायक है। यह आमाशय (पेट), यकृत और हृदय को शक्ति देती है। इसकी जड़ की छाल पुराने बुख़ारों को तोड़ने के लिये इस्तेमाल की जाती है। इसकी एक खुराक में गिरी की 3 से 4 ग्राम मात्रा ली जानी चाहिये।

## गाजर (Carrot) (*Daucus carota* Linn.)



‘गाजर’ भारत, पाकिस्तान, नेपाल और अफ्रीका में पैदा होती है। इसका स्वभाव दूसरी श्रेणी में गर्म व तर (आद्र) है। गाजर पेशाब लाती है। यह पेशाब की जलन, गुर्दे (वृक्क) व मसाने (मूत्राशय) की पथरी और विभिन्न प्रकार की सूजनों में फ़ायदा पहुँचाती है। गाजर शरीर की कमज़ोरी दूर करती है और दिल की घबराहट ख़त्म करने में लाभदायक है। गाजर को आवश्यकतानुसार इस्तेमाल करना चाहिये।

## गिलो (Moon Creeper) (*Tinospora cordifolia* (Willd.) Miers.)



'गिलो' भारत, पाकिस्तान और अफ्रीका में पैदा होता है। इसका स्वभाव प्रथम श्रेणी में गर्म व शुष्क है। पुराने बुखारों को तोड़ने में बहुत लाभदायक है। इसके पत्तों का जोशांदा (काढ़ा) और तने के टुकड़ों का इस्तेमाल किया जाता है। गिलो का सत्त्व दस्त और पेचिश में बहुत फ़ायदा पहुँचाता है। पत्ते 1 से 2 ग्राम और लकड़ी 5 से 7 ग्राम खुराक के तौर पर इस्तेमाल की जानी चाहिये।

**गुल-ए-सुर्ख (गुलाब)**  
**(Rose)**  
(*Rosa damascena* Mill.)



'गुल-ए-सुर्ख' लगभग हर जगह पैदा होता है। इसका स्वभाव दूसरी श्रेणी में सर्द व शुष्क है। इसके पत्ते और फूल औषधि के रूप में इस्तेमाल किये जाते हैं। गुल-ए-सुर्ख हृदय और मस्तिष्क को ताज़गी देता है और कमज़ोरी दूर करता है। इससे कब्ज़ टूट जाता है। इसके पत्ते कुचलकर बांधने से फोड़े-फुंसियां पक कर फूट जाती हैं। गुलाब के फूल की 5 से 7 ग्राम पत्तियां एक खुराक में काफी होती हैं।

## हिना (मेंहदी) (Henna) (*Lawsonia inermis* Linn.)



‘हिना’ की कृषि गर्म क्षेत्रों में की जाती है। यह विशेषतः भारत, पाकिस्तान, मिस्र, सूडान, मैडागास्कर और आस्ट्रेलिया में बड़े पैमाने पर उगाई जाती है। इसका स्वभाव दूसरी श्रेणी में सर्द व शुष्क होता है। इसका लेप बालों को लाल और सूजन को कम कर देता है। हिना पेशाब लाती है और खून को साफ़ करती है। इसका लेप माथे पर लगाने से सर का दर्द दूर हो जाता है। एक खुराक में इसकी 1 से 3 ग्राम तक मात्रा इस्तेमाल की जा सकती है।

## हुलबा (मेथी) (Fenugreek)

(*Trigonella foenum-graecum* Linn.)



‘हुलबा’ भारत, पाकिस्तान, नेपाल, अरब और अफ्रीका में पैदा होता है। यह दूसरी श्रेणी में गर्म व शुष्क स्वभाव रखता है। इसके पत्ते और बीज औषधि गुण रखते हैं। हुलबा के बीज कमर के दर्द, अतिसार, पेचिश, अफारे और मांसपेशियों की बीमारियों में लाभप्रद होते हैं। इसका लेप बांधने से सूजन दूर हो जाती है। हुलबा के बीजों से सर धोने से बाल लम्बे और काले होते हैं। बीज 3 ग्राम और पत्ते आवश्यकतानुसार इस्तेमाल किये जाने चाहिये।

**इनाबुस सालब (मको)**  
**(Black Nightshade)**  
(*Solanum nigrum* Linn.)



‘इनाबुस सालब’ दुनिया के लगभग सभी देशों में पाया जाता है। इसका स्वभाव दूसरी श्रेणी में सर्द व तर होता है। इनाबुस सालब बुखार में सुकून देता है और सूजन में कमी लाता है। इसका लेप आमाशय और यकृत की सूजन दूर करने के लिये इस्तेमाल किया जाता है। इसकी एक खुराक में 5 से 7 ग्राम मात्रा ली जा सकती है।

## इजख़िर (Lemon Grass) (*Cymbopogon jawarancusa* Schult.)



'इजख़िर' भारत, पाकिस्तान, बंगलादेश, अरब और चीन में पैदा होती है। इसका स्वभाव दूसरी श्रेणी में गर्म व शुष्क होता है। पत्तियां और जड़ औषधि के रूप में इस्तेमाल की जाती हैं। इजख़िर की पत्तियों का जोशांदा (काढ़ा) मौसमी बुखारों और नज़ला जुकाम में बहुत लाभकारी है। इसकी जड़ का जोशांदा फ़ालिज, लक़्वा, गठिया और हर प्रकार की सूजन दूर करने के लिये लाभकारी है। इसकी 5 से 7 ग्राम तक मात्रा एक खुराक में मुनासिब है।

**जामुन**  
**(Black Berry)**  
(*Syzygium cumini* (Linn.) Skeels)



‘जामुन’ भारत, पाकिस्तान, अफ्रीका और नेपाल में पैदा होती है। इसका स्वभाव दूसरी श्रेणी में सर्द व शुष्क है। इसके फल, बीज और पत्ते औषधि के रूप में इस्तेमाल किये जाते हैं। जामुन भूख बढ़ाती है। आमाशय (पेट) और यकृत को शक्ति देती है। दस्तों (अतिसार) को रोकने में लाभप्रद है। इसके बीज ज़ियाबेतुस (मधुमेह) का प्रभावकारी इलाज हैं। पत्तों का चूर्ण दांतों के लिये लाभकारी होता है। जामुन की खस्ता गिरी 3 से 5 ग्राम की मात्रा में इस्तेमाल की जानी चाहिये।

## कलौंजी (Small Fennel) (*Nigella sativa* Linn.)



'कलौंजी' भारत, पाकिस्तान, अरब और अफ्रीका में पायी जाती है। इसका स्वभाव तीसरी श्रेणी में गर्म व शुष्क है। इसके बीजों में औषधि गुण पाये जाते हैं। यह पाचक होती है और गैस बनने से रोकती है। इसके बीजों को भून कर उनकी पोटली बनाकर सुँघाना दौरों में लाभकारी है। एक खुराक में 1 से 3 ग्राम की मात्रा लेनी चाहिए।

**कमून (ज़ीरा सफ़ेद)**  
**(Cumin)**  
(*Cuminum cyminum* Linn.)



'कमून' भारत, पाकिस्तान, नेपाल और बंगलादेश में पाया जाता है। इसका स्वभाव दूसरी श्रेणी में गर्म व शुष्क है। आमाशय, यकृत और आंतों की कमजोरी दूर करता है। गैस की सभी तकलीफों में प्रभावकारी है। स्त्रियों में दूध की मात्रा बढ़ाता है। इससे मोटापा दूर करने में बहुत मदद मिलती है। इसकी एक खुराक में 3 से 5 ग्राम तक की मात्रा लेनी चाहिये।

## कासनी (Cichory) (*Cichorium intybus* Linn.)



‘कासनी’ भारत, पाकिस्तान, नेपाल और चीन में पाई जाती है। इसका स्वभाव पहली श्रेणी में सर्द (शीतल) व तर (आद्र) है। इसके पत्ते, जड़ और बीजों में औषधि गुण पाये जाते हैं। कासनी के बीज अमाशय, यकृत और जोड़ों की सूजन दूर करने की बेहतरीन दवा हैं। बीजों का जोशांदा (काढ़ा) बनाकर इस्तेमाल किया जाता है। कासनी की जड़ का जोशांदा फ़ालिज, लक़वा और गठिया जैसे रोगों में बहुत लाभकारी है। एक खुराक में 5 से 7 ग्राम की मात्रा लेनी चाहिये।

## कताँ (अलसी) (Linseed)

(*Linum usitatissimum* Linn.)



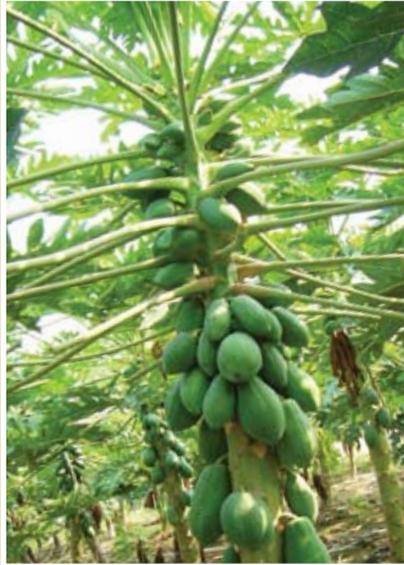
‘कताँ’ भारत, पाकिस्तान, मिस्र, रूस और युरोप में पैदा होती है। इसका स्वभाव प्रथम श्रेणी में गर्म व शुष्क है। दवा के रूप में इसके बीज काम में लाए जाते हैं। इसके बीजों का जोशांदा (काढ़ा) खांसी, दमा और गले की खराश दूर करने में बड़ा प्रभावकारी है। इसके बीजों का लेप फोड़े-फुंसियों का मुंह खोलने में सहायक है।

**नीम**  
**(Margosa)**  
(*Azadirachta indica* A. Juss.)



‘नीम’ भारत, पाकिस्तान, अफ्रीका और चीन में पैदा होता है। स्वभाव में प्रथम श्रेणी में गर्म व शुष्क है। नीम के वृक्ष का हर भाग कोई न कोई औषधि गुण रखता है। इसके बीज बवासीर दूर करने में लाभप्रद हैं। नीम त्वचा की बीमारियों से लड़ने, पुराने बुखार तोड़ने और ऊपरी घावों की गंदगी साफ़ करने में बेमिसाल है। इसके बीज 3 से 5 ग्राम और पत्ते और छाल 5 से 7 ग्राम इस्तेमाल किये जा सकते हैं।

## पपीता (Papaya) (*Carica papaya* Linn.)



‘पपीता’ भारत, पाकिस्तान और बंगलादेश में अधिकता के साथ पाया जाता है। इसका स्वभाव तीसरी श्रेणी में गर्म व शुष्क है। पपीता बहुत ही पाचक होता है। पेट की गैस निकालने में सहायक होता है, जिसके कारण पेट के दर्द, उल्टी और दस्त में बहुत लाभप्रद है। मुटापा दूर करता है। रियाही दर्द और बवासीर में भी बड़ा प्रभावकारी है। इसे पाचन योग्य मात्रा में इस्तेमाल किया जाना चाहिये।

**रेहान (तुलसी)**  
**(Holy Basil)**  
(*Ocimum sanctum* Linn.)



‘रेहान’ भारत, पाकिस्तान और बंगलादेश में पायी जाती है। इसका स्वभाव दूसरी श्रेणी में गर्म व शुष्क है। औषधि के रूप में इसके पत्ते और बीज इस्तेमाल किये जाते हैं। रेहान के पत्तों का जोशांदा नज़ले, बुखार और खांसी का प्रभावकारी इलाज है। इसके ताज़ा पत्तों का रस कान के दर्द में बहुत लाभप्रद है, सूजन दूर करता है और गैस और अफारे में भी फ़ायदा पहुंचाता है। इसकी एक खुराक में 500 मिलीग्राम से 1 ग्राम तक की मात्रा ली जानी चाहिये।

**सतावर**  
**(Asparagus)**  
(*Asparagus racemosus* Willd.)



‘सतावर’ भारत और पाकिस्तान में पैदा होता है। इसका स्वभाव पहली श्रेणी में सर्द व तर है। औषधि के रूप में इसकी जड़ इस्तेमाल की जाती है। सतावर की जड़ ल्यूकोरिया और जिरयान में बहुत लाभकारी है, और कमर के दर्द में भी फ़ायदा पहुंचाती है। इससे ज़च्चा के दूध की मात्रा में वृद्धि होती है। इसकी खुराक में 7 से 12 ग्राम तक मात्रा काफ़ी है।

## सीर (लहसुन) (Garlic) (*Allium sativum* Linn.)



'सीर' लगभग हर स्थान पर पैदा होता है। इसका स्वभाव तीसरी श्रेणी में गर्म व शुष्क है। सीर गैस की सभी तकलीफों को दूर करता है। बलगम निकालने और मोटापा दूर करने में सहायक होता है। मांसपेशियों की कमजोरी में बहुत लाभकारी है, और फ़ालिज और लक़वे के रोगियों को रास आता है। एक खुराक में इसकी 3 ग्राम मात्रा काफ़ी होती है।

## शहतूत (Mulberry) (*Morus indica* Linn.)



‘शहतूत’ भारत, पाकिस्तान और बंगलादेश में पाया जाता है। इसका स्वभाव दूसरी श्रेणी में गर्म व तर है। इसके पत्ते और फल औषधि गुण रखते हैं। पत्तों का जोशांदा गले की ख़राश, नज़ले और खांसी में बहुत फ़ायदा करता है। शहतूत रक्त की गर्मी को कम करता है और रंग को निखारता है। एक खुराक में पत्तों का 25 मिलीलीटर रस लेना चाहिये।

## तेजपात (Indian Bay Leaf) (*Cinnamomum tamala* Nees. & Eberm.)



‘तेजपात’ भारत, पाकिस्तान और बर्मा में पैदा होता है। इसका स्वभाव दूसरी श्रेणी में गर्म व शुष्क होता है। दवा के रूप में इसके पत्ते इस्तेमाल किये जाते हैं। तेजपात पाचक होता है और गैस को बाहर निकालने में मदद देता है। इससे अमाशय की कमजोरी ख़त्म होती है। यह हृदय व मस्तिष्क को आराम पहुंचाता है। इसके पत्ते कपड़ों को कीड़ों से सुरक्षित रखते हैं। इसकी 2 से 4 ग्राम मात्रा एक खुराक के लिये उपयुक्त है।



## केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद

आयुर्वेद, योग व प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध एवं  
होमियोपैथी (आयुष) मंत्रालय, भारत सरकार

61-65, इन्स्टिट्यूशनल एरिया, जनकपुरी, नई दिल्ली - 110 058

दूरभाष: +91-11-28521981, 28525982, 28525983, 28525831/52/62/83/97,

28520501, 28522524 • फ़ैक्स: +91-11-28522965

वैबसाइट: [www.ccrum.net](http://www.ccrum.net)

ईमेल: [unanimedicine@gmail.com](mailto:unanimedicine@gmail.com)